CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) की आवश्यकता एवं भविष्य

डॉ. नरेन्द्र कुमार पाल
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
दीपक कुमार जाँगिड़
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), वर्धा, महाराष्ट्र
Email: drnavinsir@yahoo.in, dkj55566@gmail.com Mob.- 9265032070

First draft received: 12.11.2024, Reviewed: 25.11.2024, Final proof received: 10.12.2024, Accepted: 25.12.2024

सार-संक्षेप

प्रस्तुत लेख के माध्यम से वर्तमान भारतीय शिक्षण प्रणाली में नए भारत के निर्माण को लेके शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति, मूल्यों एवं प्रणालिओं के साथ विज्ञान एवं विचारों में आत्मनर्भरता की भवन विकसित करना अनिवार्य प्रतीत हो रहा है। इसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के स्वरूप को वास्तविकता प्रदान करने में सफलता प्राप्त हुई है। लेकिन वास्तविक सफलता तो इसके परिणामों में दृष्टिगत होने पर ही प्रत्यकक्षित होगी। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को संभाल प्रदान करने हेतु शिक्षकों की आवश्यकता महत्वपूर्ण है, और श्रेष्ठ शिक्षकों के साथ भविष्य को और ज्यादा सुरक्षित कर सकते है। शिक्षकों के निर्माण के लिए एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) अस्तित्व में आया है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से ईस कार्यक्रम के उद्देश्य, स्वीकृति एवं परिणामों की सार्थकता जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ITEP आदि.*

प्रस्तावना

शिक्षण कार्य को सभी कार्यो में श्रेष्ट और पुनीत सेवा का क्षेत्र माना जाता है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही किसी राष्ट्र का निर्माण और विकास होता है। राष्ट्र में प्रचलित शिक्षा प्रणाली उसके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यह देखा गया है कि वह राष्ट्र जो शिक्षित है अर्थात शिक्षा पर अधिक ध्यान देते है अन्य राष्ट्रों की तुलना में प्रत्येक क्षेत्र जैसे कृषि, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, खगोल विज्ञान, संचार आदि के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी अत्यधिक गति से विकास कर रहे है। भारतीय समाज शिक्षा के प्रति हमेशा से अत्यधिक सजग व तत्पर रहा है क्योंकि "भारत में शैक्षणिक संस्थान, सभ्यता के उद्भव के समय से ही अस्तित्व में हैं" (keay, 1972)। भारत में अनेक शिक्षाशास्त्री हुए है जिन्होंने न केवल भारत को अपितु सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान एवं शिक्षा के द्वारा एक सभ्य समाज व वसुदेवकुटुंबहकम के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। भारत एक मात्र राष्ट्र है जिसके पास ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, आरण्यक, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य और पुराण जैसे पवित्र ग्रंथ हैं तथा प्राचीन भारत में नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय भी थे, जहाँ विश्व के अनेक शोधार्थी, विद्यार्थी व शिक्षक, शिक्षण कार्य की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अन्य शिक्षा भी प्राप्त करते थे जिसके कारण भारत को विश्वगुरु कहा जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए शिक्षा प्रणाली के सतत विकास के लिए अनेक शिक्षा आयोग व नीतियाँ जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948), मुदालियर आयोग(1952), भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968, 1986 और 1992), फिर सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए, 2000-2001), शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) और नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आदि को अपनाया गया। इन सभी के अतिरिक्त मुख्यतः शिक्षक शिक्षा के लिए "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद 1993" कि स्थापना की गई। इस परिषद की स्थापना के पीछे कोठारी आयोग द्वारा उल्लेखित यह कथन था कि, "देश का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।" देश के भविष्य का निर्माता एक शिक्षक होता है। अतः भारतीय शिक्षा प्रणाली में समय-समय पर शिक्षक शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रमों व पाठ्यचर्याओं में अनेक परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान समय मे NEP-2020 के अंतर्गत उन सभी विद्यार्थियों के लिए एनसीटीई द्वारा एक नव-प्रारंभित "एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP)" को प्रारंभ किया है जो भविष्य में शिक्षक बनाना चाहते है। यह एक 4 वर्षीय विशिष्ट रूप से अभिकल्पित एकीकृत डिग्री कार्यक्रम है जिसका

उद्देश्य फाउंडेशनल, प्रिपरेटरी, मिडिल और सेकन्डेरी (5+3+3+4) स्तर के लिए शिक्षकों को तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी प्रथम दो वर्ष सामान्य पाठ्यक्रम जैसे बी.ए., बी.एससी. या बी.कॉम. की पढ़ाई करेंगे तथा अंतिम दो साल में शिक्षक शिक्षा के बारे में अध्ययन करेंगे। “यह कार्यक्रम 22 अक्टूबर 2021 को अधिसूचित किया गया था और सत्र 2023-24 से प्रारंभ किया गया।”(फा. सं. एनसीटीई. रेगु. 022/ 16/2023)

अध्ययन का उद्देश्य

मुख्यतः इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

- एकीकृत अध्यापक शिक्षक कार्यक्रम की आवश्यकता का अध्ययन करना
- एकीकृत अध्यापक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के भविष्य का अध्ययन करना

एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) का अवलोकन

“परिवर्तन संसार का नियम है”(अरस्तू)। बदलते समाज की आवश्यकताओं की प्रति-पूर्ति और जीवन के स्तर को उच्च करने के उद्देश्य से वर्तमान समय में संसार के प्रत्येक क्षेत्र जैसे; चिकित्सा, परिवहन, तकनीकी, कृषि, रक्षा, पर्यटन आदि में अत्यधिक तीव्र रूप से परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा का क्षेत्र भी इस परिवर्तन से अछूता नही रहा है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही समाज के जीवन स्तर को बेहतर किया जा सकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में NEP-2020 के माध्यम से परिवर्तन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के विकास के लिए अनेक संवादों व सुझावों के माध्यम से नीतियों व कार्यक्रमों का निर्माण किया गया है। इस शिक्षा नीति में गुणवत्ता पूर्ण व पेशेवर शिक्षकों के निर्माण को भी महत्त्व दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पूर्व की शिक्षा नीति 1986 में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के उद्देश्य से सेवारत एवं सेवापूर्व शिक्षकों के लिए विशेष रूप से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अभिकल्पन किया गया। इस कार्यक्रम के लिए विद्यार्थियों को सर्वप्रथम तीन साल के डिग्री कार्यक्रम जैसे बी.ए., बी.एससी. या बी.कॉम. अथवा मास्टर डिग्री कार्यक्रम को पूरा करना होता है। इसके पश्चात यदि कोई विद्यार्थी शिक्षक बनाना चाहता है तो उसे दो साल के बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम मे प्रवेश लेना होता है। यह कार्यक्रम शिक्षकों के निर्माण के लिए एक लंबी प्रक्रिया थी। NEP-2020 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने एक नवनिर्मित एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम(आईटीईपी) को प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अपने कार्य के प्रति समर्पित, पेशेवर रूप से प्रशिक्षित, गुणवत्ता युक्त, ऊर्जावान एवं सुसज्जित शिक्षकों का निर्माण करना है जो विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विकासात्मक शिक्षण अनुभवों के निर्माण और क्रियान्वयन में सक्षम हो। इस कार्यक्रम के अंतर्गत यदि कोई विद्यार्थी शिक्षक बनाना चाहता है तो वह अपनी उच्च माध्यमिक की विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के तुरंत पश्चात एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) में प्रवेश ले सकता है। “आईटीईपी चार शैक्षणिक वर्षों का होता है, जिसमे इंटर्नशिप(क्षेत्र-आधारित अनुभव और अभ्यास शिक्षण) सहित आठ सेमेस्टर शामिल है तथा कोई भी छात्र अध्यापक जो किसी भी सेमेस्टर को पूरा करने में असमर्थ रहता है तो उसे कार्यक्रम में प्रवेश की तारीख से अधिकतम छः साल की अवधि के भीतर कार्यक्रम को पूर्ण करने की अनुमति होती है”(फा. सं. एनसीटीई. रेगु. 011/80/2018)। इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थियों को शिक्षक शिक्षा की पेशेवर डिग्री के साथ-साथ विशेष विषयों जैसे; गणित, विज्ञान, इतिहास, कला, अर्थशास्त्र आदि में स्नातक की डिग्री भी प्रदान की जाती है। आईटीईपी कार्यक्रम विद्यार्थियों को बहुत सुविधाजनक व लचीला शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करता है जैसे; कोई विद्यार्थी किसी कारणवश अपनी पढ़ाई जारी नही रख पाता है तो यह उस विद्यार्थी को एक वर्ष पश्चात सर्टिफिकेट और दो वर्ष पश्चात डिप्लोमा प्रदान करता है जिसके कारण विद्यार्थी के समय का नुकसान नही होता है। आईटीईपी कार्यक्रम में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित कंप्युटर आधारित राष्ट्रीय सामान्य प्रवेश परीक्षा(एनसीईटी) के द्वारा होता है। यह कार्यक्रम एक अंतहनुशासनात्मक कार्यक्रम है जिसमे विद्यार्थी विश्व मानक के समान विज्ञान, कला और शिक्षण कार्य के साथ-साथ भारतीय मूल्यों, परंपरा और संस्कृति को जानेगें तथा भविष्य में अपने विद्यार्थियों में ज्ञान को स्थानातरण करने, भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने व एक सभ्य राष्ट्र के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान देने में सक्षम होंगे।

आईटीईपी का वर्गीकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में विद्यालयी शिक्षा के शैक्षणिक ढांचे और पाठ्यचर्या को पुनरगठित करते हुए 5+3+3+4 को लागू किया गया है। प्रत्येक स्तर के लिए विशेष शिक्षण विधियों व ज्ञान युक्त शिक्षकों की अवशयकता होती है। अतः आईटीईपी का कार्य स्कूली शिक्षा के विशेष स्तर जैसे;आधारभूत स्तर, प्रारंभिक स्तर, मध्यस्तर तथा माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अभ्यास को विकसित करने और सुधारने के लिए आवश्यक ज्ञान, क्षमताओं और मूल्यों और स्वभाव के साथ कुशल शिक्षकों को उपलब्ध कराना है। आईटीईपी कार्यक्रम भी विद्यालयी शिक्षा स्तर के अनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है।

आईटीईपी कार्यक्रमों को नव निर्मित विद्यालयी संरचना के अनुरूप निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

आईटीईपी कार्यक्रम का वर्गीकरण	
आधारभूत स्तर	इस स्तर पर आईटीईपी कार्यक्रम छात्राध्यापक को 3-8 वर्ष की आयु के बच्चों को पढ़ाने के लिए योग्य बनाएगा, जिसमे तीन वर्ष तक आंगनवाड़ी केंद्रों या बालवाटिका या अन्य प्रीस्कूलों में तथा 2 वर्ष कक्षा 1 और 2 की विद्यालयी शिक्षा सम्मिलित है। आधारभूत स्तर पर बच्चे खेल और अन्वेषण के माध्यम से सीखते हैं और सीखने के इन तरीकों के माध्यम से मूल्यवान, व्यवहार और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है। आधारभूत स्तर के शिक्षण के लिए आवश्यक शिक्षण अभ्यास आधारभूत स्तर के आईटीईपी कार्यक्रम द्वारा प्रदान किया जाएगा।
प्रारम्भिक स्तर	इस स्तर पर आईटीईपी कार्यक्रम छात्राध्यापकों को कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों को पढ़ाने के लिए योग्य बनाएगा। प्रारंभिक चरण फाउंडेशनल चरण में अपनाए गए खेल-आधारित, खोज और गतिविधि-आधारित शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ-

	साथ अधिक इंटरैक्टिव कक्षा प्रशिक्षण के ज्ञान व अभ्यास द्वारा शिक्षकों को तैयार करेगा, जो पाठ्यचर्या क्षेत्रों से संबंधित सीखने में एक ठोस आधार तैयार करेगा।
मध्य स्तर	इस स्तर पर आईटीईपी कार्यक्रम छात्राध्यापकों को कक्षा 6, 7 और 8 में बच्चों को पढ़ाने के लिए योग्य बनाएगा। मध्य चरण प्रारंभिक चरण की शैक्षणिक और पाठ्यचर्या शैली पर आधारित है, लेकिन अधिक विशिष्ट विषयों और विषय शिक्षकों को समाहित करता है। मध्य चरण में, "प्रत्येक विषय के भीतर अनुभवात्मक शिक्षा और विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज को प्रोत्साहित किया जाएगा और अधिक विशिष्ट विषयों और विषय शिक्षकों की शुरूआत के बावजूद इस पर जोर दिया जाएगा" (पैरा 4.2, एनईपी 2020)।
माध्यमिक स्तर	इस स्तर पर आईटीईपी कार्यक्रम छात्राध्यापकों को कक्षा 9,10,11 और 12 के विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए शिक्षकों को तैयार करेगा। "इस स्तर पर छात्राध्यापक अपनी पसंद के अनुसार विषय केंद्रित शिक्षाशास्त्र, अंतहनुशासनात्मक विषय के ज्ञान और आलोचनात्मक चिंतन और सभी विषयों के लिए लचीलापन को ग्रहण कर एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक बनेगा।"(पैरा4.2 एनईपी 2020)। "समग्र विकास और साल-दर-साल विषयों और पाठ्यक्रमों का व्यापक विकल्प माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की नई विशिष्ट विशेषता होगी" [पैरा 4.9, एनईपी 2020]

आईटीईपी कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति

भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम कई दशकों से क्रियान्वित है और समय-समय पर इन कार्यक्रमों की पाठ्यचर्या तथा विषयवस्तु को संवर्धित किया जाता रहा है क्योंकि शिक्षक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर विद्यार्थियों में अंतर्निहित योग्यताओं को बाहर निकाल कर उन्हे एक श्रेष्ट व सभ्य नागरिक बना सके। उसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में आईटीईपी एक क्रांतिकारी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रस्तावित किया गया है जिसके द्वारा विद्यार्थी चार साल की समयावधि में बी.एड.के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त कर सकते है और अपने शैक्षणिक जीवन में एक साल बचा सकते हैं। सर्वप्रथम एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम 22 अक्टूबर 2021 को अधिसूचित किया गया था जिसका notification 26 अक्टूबर 2021को "राजपत्र अधिसूचना: आईटीईपी मानदंड और मानक" के नाम से वेबसाईट पर अपलोड किया गया। 1 मई 2022 को इच्छुक संस्थानों से आईटीईपी के प्रथम चरण के पायलट प्रोजेक्ट के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए तथा 3 मार्च 2023 को 42 केंद्रीय/राज्य संस्थानों को मान्यता प्रदान की गई थी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी द्वारा 26 जून 2023 को आईटीईपी में प्रवेश के लिए एनसीईटी, 2023 के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं तथा 9 अगस्त 2023 को परीक्षा का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। आईटीईपी कार्यक्रम के सन् 2024 तक दो सत्र 2023-24 तथा 2024-25 संचालित है। यह कार्यक्रम वर्तमान समय में कुल 64 शिक्षा संस्थानों में संचालित हो रहा है।

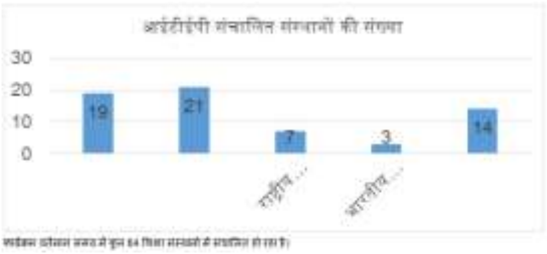

आईटीईपी संचालित कुल संस्थानों की संख्या

संस्थानों का प्रकार	आईटीईपी संचालित संस्थानों की संख्या
केन्द्रीय विश्वविद्यालय	19
राज्य विश्वविद्यालय	21
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान	7
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	3
महाविद्यालय	14

आईटीईपी संस्थानों का ग्राफिकल प्रदर्शन

आईटीईपी कार्यक्रम का भविष्य

"शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य ऐसे अच्छे इंसानों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिनमे करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हो। इसका उद्देश्य ऐसे रचनाशील लोगों को तैयार करना है जो भारतीय संविधान द्वारा परिकल्पित 'समावेशी और बहुलतावादी' समाज के निर्माण में उत्कृष्ट पद्धति से योगदान कर सके" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020)। इस उद्देश्य कि पूर्ति हेतु ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो अपने शिक्षण द्वारा उपरोक्त गुणों से युक्त इंसानों का विकास कर सके। एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) भारत सरकार द्वारा उसी दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण व परिवर्तनकारी कदम है जिसके द्वारा "स्कूल शिक्षकों का एक ऐसा समूह बनाएगा जो अगली पीढ़ी को आकार देगा। शिक्षक की तैयारी एक ऐसी गतिविधि है जिसके लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान, स्वभाव और मूल्यों के निर्माण और सर्वोत्तम सलाहकारों के तहत अभ्यास के विकास की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को भारतीय मूल्यों, भाषाओं, ज्ञान, लोकाचार और जनजातीय परंपराओं सहित परंपराओं पर आधारित होना चाहिए, साथ ही शिक्षा और शिक्षाशास्त्र में नवीनतम प्रगति से भी अच्छी तरह वाकिफ होना चाहिए" [पैरा 15.1, एनईपी 2020]। "वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तर प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक पर शिक्षक-विद्यार्थी का अनुपात क्रमशः 26, 19, 17 और 27 है"(a) जो "शिक्षा के अधिकार नियम-2009 में वर्णित शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात प्राथमिक स्तर पर 30 और उच्च प्राथमिक स्तर पर 35 तथा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा वर्णित माध्यमिक स्तर पर 30 से बहुत कम है"(b)।

अनिवार्य एवं वर्तमान शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात की तुलना

विद्यालयी शिक्षा के स्तर	अनिवार्य अनुपात	वर्तमान अनुपात	वृद्धि या कमी
प्राथमिक	30	26	-13.33%
उच्च प्राथमिक	35	19	-45.71%
माध्यमिक	30	17	-43.33%
उच्च माध्यमिक	30	27	-10.00%

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषणात्मक आधार से स्पष्ट है की विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षकों का अभाव है। आरटीई 2009, आरएमएसए तथा एनईपी-2020 में वर्णित आवश्यक शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात को साकार करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की आवश्यकता है। इसकी पूर्ति हेतु नव प्रारंभित एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) के द्वारा ही संभव है। अतः आईटीईपी कार्यक्रम के पास एक उद्देश्य और आवश्यकता है जिसके कारण उसका भविष्य उज्जवल है अर्थात यह कार्यक्रम भविष्य में और अधिक तेजी से विकास करेगा। इस कार्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी अपने एक शैक्षणिक वर्ष को बचते हुए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक बन सकेगा जिसके कारण यह भविष्य में विद्यार्थियों के मध्य और अधिक प्रसिद्ध होगा। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने सत्र 2023-24 में केवल 42 संस्थानों को तथा उसके पश्चात सत्र 2024-25 में 22 संस्थानों को आईटीईपी कार्यक्रम संचालित करने की स्वीकृति प्रदान की थी। वर्तमान समय में केवल 64 संस्थानों में यह कार्यक्रम संचालित है जबकि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा जारी 28 वी वार्षिक रिपोर्ट सत्र 2022-23 के अनुसार कुल संस्थानों की संख्या 15896 है। अतः आईटीईपी कार्यक्रम भविष्य में इन सभी संस्थानों में संचालित किया जा सकता है। आईटीईपी कार्यक्रम के संचालन में प्रारम्भिक सत्र(2023-24) व वर्तमान सत्र(2024-25) की तुलना में 52.38% की वृद्धि पाई गई है जो इस कार्यक्रम के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

आईटीईपी कार्यक्रम संचालित संस्थानों की तुलना

संस्थानों का प्रकार	आईटीईपी संचालित संस्थानों की संख्या		वृद्धि या कमी
	सत्र 2023-24	सत्र 2024-25	
केन्द्रीय विश्वविद्यालय	13	19	+46.15%
राज्य विश्वविद्यालय	11	21	+90.90%
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान	5	7	+40.00%
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	2	3	+50.00%
महाविद्यालय	11	14	+27.27%
कुल	42	64	+52.38%

यह उम्मीद की जा रही है कि वर्ष 2030 के अंत तक भारत में विद्यार्थियों की संख्या लगभग 250 मिलियन को पार कर जाएगी और उन्हें समुचित शिक्षा प्रदान करना शिक्षकों के लिए एक वास्तविक चुनौती होगी और संस्थानों को इस चुनौती का सामना करने के लिए समुचित रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती करनी होगी जिसके लिए एकीकृत शिक्षक शिक्षा (आईटीईपी) जैसे कार्यक्रमों की आवश्यकता होगी। अतः कहा जा सकता है की आईटीईपी कार्यक्रम का भविष्य उज्जवल है।

निष्कर्ष

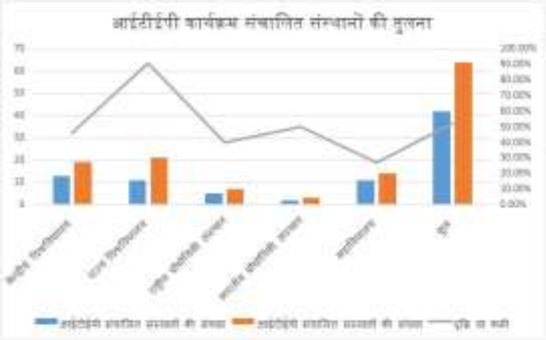

भारतीय शिक्षा प्रणाली में 30 वर्षों की एक लंबी समयावधि के उपरांत एक शिक्षा नीति के द्वारा परिवर्तन करने की कोशिश की जा रही है जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नाम से जाना जाता है। एनईपी 2020 ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को प्रस्थापित किया है। इस नीति के अंतर्गत अन्य देशों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए विकास से कदम-से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एनईपी 2020 में आईटीईपी कार्यक्रम को प्रस्तुत किया गया है क्योंकि किसी भी राष्ट्र का निर्माता एक सर्वगुण सम्पन्न शिक्षक होता है। आईटीईपी शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय और क्रांतिकारी अवधारणा है जिसके द्वारा समाज को अधिक समर्पित और अपने पेशे के प्रति अधिक प्रतिबद्ध शिक्षक प्राप्त होंगे जो अपने ज्ञान, अनुभव और बौद्धिक कौशल से भारत को विश्वगुरु बनाने में अपना अहम योगदान प्रदान करेंगे। आईटीईपी कार्यक्रम वर्तमान समय में 15896 संस्थानों में से केवल 64 संस्थानों में संचालित किया जा रहा है जो कुल संस्थानों का केवल 0.40% है। अतः कार्यक्रम के पास सभी संस्थानों में संचालित होने का एक महत्वपूर्ण अवसर है जो उसके सकारात्मक भविष्य को प्रदर्शित करता है। इस कार्यक्रम को संचालित हुए अभी तक केवल दो शैक्षणिक वर्ष हुए है और इसके संचालन में 52.38% की वृद्धि देखने को मिलती है जो इस कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों और संस्थानों की रुचि को प्रदर्शित करती है। इस कार्यक्रम के लोकप्रिय होने के पीछे इसका लचीलापन भी है जो विद्यार्थियों को मल्टीपल एंट्री और एग्जिट प्रदान करता है।

कार्यक्रम का यह लक्षण इसके भविष्य के लिए बहुत अवसर प्रदान करता है। इस कार्यक्रम के द्वारा शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात की पूर्ति कम समय में उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षकों के द्वारा पूर्ण की जा सकती है इसलिए यह कार्यक्रम भविष्य में अधिकांश संस्थानों में संचालित किया जाएगा। अतः आईटीईपी कार्यक्रम एक दूर-दृष्टि के साथ भविष्य में शिक्षक शिक्षा के केंद्र में रहेगा।

संदर्भ

- Kumar, A. (2022) "*An Exploratory Study of Integrated Teacher Education Programs in India*" Ph.D. Thesis, University of Delhi.
- Kumar, R. (2020). "*Exploring the Effectiveness of Integrated Teacher Education Programs*" Journal of Teacher Education, Vol. 71(3), pp. 269-284. DOI: 10.1177/0022487119894406
- Rupak, C. (2022) "*STRATEGIES TO IMPLEMENT INTEGRATED TEACHER EDUCATION PROGRAMME (ITEP) IN RESPECT TO NEP 2020*" International Journal of Novel Research and Development vol.7
- Saha, S. (2022) "*Integrated Teacher Education: A Review of Literature*" Journal of Education and Human Development, Vol. 11(5), pp. 1-14. DOI: 10.30845/jeHD.v11n5p1-14
- Singh, R. (2020) "*Effectiveness of Integrated Teacher Education Programs in Improving Student Outcomes*" M.Ed. Dissertation, University of Mumbai.
- National Council for Teacher Education (ncte.gov.in) 18/09/2024
- Retrived form, https://ksbed.ac.in/wp-content/uploads/2023/08/NCTE-ITEP-Book-Curriculum-framework-2023-MRNB.pdf
- Retrived from, https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- Retrived from, https://www.education.gov.in/parl_ques ANNEXURE REFERRED TO IN REPLY TO PART (c) and (d) OF RAJYA SABHA UNSTARRED QUESTION NO. 500 ANSWERED ON 07.02.2024 ASKED BY HONB'LE MP SHRI DEREK O' BRIEN REGARDING 'TEACHER-STUDENT RATIO'
- Press Information Bureau Government of India Ministry of Human Resource Development student teacher ratio 09February2017 16:51 IST
- UNESCO Institute for Lifelong Learning, (2020). "*Integrated Teacher Education: A Guide for Policy-Makers.*"